लोक परंपरा और आधुनिक प्रभाव

कंचन एस. कुड़चीकर

सहायक अध्यापिका, हिंदी विभाग, एम.ई.एस. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, राजाजी नगर, बेंगलुरु.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18791046

ABSTRACT:

भारतीय लोक परंपरा प्रकृति, आस्था और सामुदायिक जीवन का अभिन्न अंग है, जो त्योहारों, लोककथाओं और लोकनाट्यों के माध्यम से निरंतर प्रवाहित होती रहती है। समकालीन दौर में आधुनिकता ने वैज्ञानिक सोच, तर्कसंगतता और तकनीकी विकास के साथ समाज को नई दिशा दी है। यद्यपि आधुनिकता के कारण संयुक्त परिवार और पारंपरिक मूल्यों में कुछ ह्रास हुआ है, किंतु यह शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में वरदान भी सिद्ध हुई है। परंपरा और आधुनिकता परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं। एक स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए परंपरा रूपी जड़ों को सुरक्षित रखते हुए आधुनिकता के सकारात्मक पहलुओं के साथ सामंजस्य स्थापित करना समय की मांग है।

KEYWORDS:

लोक परंपरा, आधुनिकता, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक समन्वय, जीवन शैली.

लोक परंपरा

लोक परंपरा का अर्थ है "जनता की परंपराएं"। यह उन तरीकों को आगे बढ़ाता है जिन्हें जीवन के प्राकृतिक क्रम को स्थानीय विश्वासों, देवताओं और रीति-रिवाजों के माध्यम से संजोये रखा है। भारत में आस्थाएं जीवन के चक्र से अलग नहीं हैं। हर क्षेत्र का अपना एक अनुष्ठान कैलेंडर होता है जो ऋतुओं की लय, सूर्य-चंद्रमा की गति और धरती की समृद्धि से जुड़ा होता है। यह परंपराएं केवल शास्त्रों या संस्थानों तक सीमित न रहकर रोजमर्रा के जीवन में, जैसे बुवाई के समय गाए जाने वाले गीतों में, गांव के मंदिरों में जलाए गए दीपों में और बुजुर्गों द्वारा बच्चों को सुनाई गई कहानियों में जीवित हैं।

लोक साहित्य के प्रमुख अंग त्यौहार, लोक कथाएं, लोकगीत, लोकनाट्य और कहावतें हैं।

त्यौहार: जैसे पूर्वी पहाड़ियों में करम पर्व की गूंज, पश्चिमी मैदानों में कुलस्वामीनी यात्राएं, उत्तर पूर्व में कोन्याक नागाओं का आओलिंग उत्सव और दक्षिण में पोंगल व ओणम; हर उत्सव कृतज्ञ सामंजस्य और समुदाय का स्मरण करता है। उत्सव एकता और आनंद का प्रतीक है। भारत का लोक कैलेंडर असंख्य उत्सवों का नृत्य है। असम का बिहू, पंजाब का बैसाखी, गुजरात की नवरात्रि, बिहार का छठ पूजा; हर उत्सव लोगों को कृतज्ञता और भक्ति की साझा भावना से जोड़ता है।

कथा कथन: लोक परंपरा की दूसरी कड़ी है जो जताती है कि यदि देवता लोग जगत का हृदय हैं तो कथा कथन उसकी आवाज है। पांडवानी कथा और स्थानीय रामायण, महाभारत की पुनर्कथाएं प्राचीन कथाओं को जीवंत करती हैं। गांव के गायक या मंदिर के भजनकार संगीत, नाटक और दर्शन को मिलाकर दिव्य सत्य और दैनिक जीवन के बीच सेतु बन जाते हैं।

लोकनाट्य: लोक परंपरा की तीसरी कड़ी लोकनाट्य और नृत्य भारत की सांस्कृतिक प्रतिभा का अद्भुत रूप है। जैसे कर्नाटक का यक्षगान, गुजरात और राजस्थान का गरबा और घूमर, बंगाल का जत्रा, तमिलनाडु का थेरुकुथु और महाराष्ट्र का तमाशा; यह सब समुदायों के लिए शिक्षा, मनोरंजन और आध्यात्मिक उन्नति का साधन हैं।

भाषा और कहावतें: लोक परंपरा की अंतिम कड़ी भाषा, कहावतें और लोक ज्ञान भी लोक परंपरा को प्रकाशित करती हैं। भारत की भाषाई विविधता उसकी भौगोलिक विविधता जितनी विशाल है। लोक

कहावतें और क्षेत्रीय लोकोक्तियां पीढ़ियों के अनुभव का संक्षिप्त भंडार हैं। जैसे- 'जैसा अन्न, वैसा मन', 'पानी जैसा बन, पत्थर न बन'। यह सरल वाक्य जीवन और धर्म की गहरी समझ को व्यक्त करते हैं।

भारत की लोक परंपराएं अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि एक जीवित प्रवाह हैं जो हर पीढ़ी के साथ अनुकूलित और विकसित होती हैं। हर अनुष्ठान, हर कथा, हर नृत्य भारत की लोक परंपरा को सनातन लय से जोड़ता है, सत्य, प्रकृति और दिव्यता का सम्मान करता है। परंपराएं लोगों के विश्वास और संस्कृति से जुड़ी हुई हैं। इस प्रकार परंपरा का आशय समाज में विरासत से प्राप्त मानवीय रीति-रिवाजों, क्रिया-कलापों, अनुष्ठानों, प्रथाओं और विश्वासों से है, जो किसी भी समाज या समुदाय के इतिहास और संस्कृति में नैतिक मूल्यों के आधार पर निर्मित हुआ करती हैं। इसके बिना समाज पंगु-सा दिशाहीन बन जाता है और उसे विशृंखलित हो जाने का भय बना रहता है।

आधुनिकता

समयानुसार मानवीय माँगों के अनुरूप वैज्ञानिक उन्नति से मानवीय और सामाजिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों तथा उसके अनुकूल जीवन साधने की नई क्रिया-कलापों को 'आधुनिकता' कहा जाता है। आधुनिकता, नए युग से जुड़े नए विचारों, नए मूल्यों और नई सुगम प्रथाओं का प्रतिनिधित्व करती है। इसका स्वरूप प्रगतिशीलता, तर्कसंगतता, वैज्ञानिकता, व्यक्तिवादिता और तकनीकी उन्नति के साथ ही सब कुछ एकदम नया होता है। आधुनिकता केवल नई चीजों का उपयोग नहीं, बल्कि विचारों और जीवन शैली में एक प्रगतिशील बदलाव है जो तर्क, समानता और नवाचार पर आधारित है।

भारत ने स्वतंत्रता के बाद से योजनाबद्ध तरीके से इस आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को अपनाया है, जिसके परिणामस्वरूप इसकी विभिन्न परंपराओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। आधुनिकता के सकारात्मक प्रभाव हैं - शिक्षा और जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक सुधार आदि। ब्रिटिश शासन ने पश्चिमी शिक्षा, प्रशासनिक और कानूनी प्रणालियों को लाकर आधुनिकीकरण की नींव रखी। इस प्रकार आधुनिकता का प्रभाव हम औपनिवेशिक काल पर देखते हैं। शिक्षा और संचार भी आधुनिकता की देन हैं, जिससे आधुनिक शिक्षा और जनसंचार माध्यमों (टीवी, इंटरनेट) के प्रसार से जागरूकता बढ़ी और सामाजिक सोच बदली। आधुनिकता ने आर्थिक परिवर्तन लाए। औद्योगीकरण, शहरीकरण और सेवा क्षेत्र के विकास ने पारंपरिक कृषि

अर्थव्यवस्था को बदला और एकल परिवारों को बढ़ावा दिया। आधुनिकता के कारण सामाजिक-सांस्कृतिक बदलाव भी हुए; जैसे संयुक्त परिवार एकल परिवार में परिणत हुए, जाति व्यवस्था में लचीलापन आया, धर्म का सार्वजनिक प्रभाव कम हुआ और धार्मिक अनुष्ठानों में बदलाव आया। लोकतांत्रिक संस्थाओं और नागरिक अधिकारों ने पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को चुनौती देकर राजनीति में भी आधुनिकीकरण लाया। आधुनिकता पारंपरिक सोच से हटकर तर्कसंगत, प्रगतिशील और नए युग के अनुसार जीवन जीने का दृष्टिकोण है जो समय के साथ समाज, विचारों, तकनीक और जीवन शैली में होने वाले बदलाव को दर्शाता है।

इन सकारात्मक प्रभावों के साथ आधुनिकता के नकारात्मक प्रभाव भी हैं जो परंपराओं पर असर करते हैं; जैसे पारंपरिक मूल्यों का कमजोर पड़ना, सांस्कृतिक अलगाव, स्थानीय पहचान का संकट, व्यावसायिकरण आदि। आधुनिकता का मतलब है पुरानी, रूढ़िवादी मान्यताओं और विचारों से हटकर नए, तर्कसंगत और खुले दृष्टिकोण को अपनाना। इसमें भावनात्मकता की कोई गुंजाइश नहीं रहती है, बल्कि यह पूर्णरूपेण बौद्धिकता के आधार पर परंपराओं की प्रासंगिकता तथा नैतिकता पर बराबर सवाल उठाती है।

अब सवाल यह है कि क्या परंपरा और आधुनिकता एक दूसरे के विरोधी हैं?

परंपरा को अधिकांश लोग अपरिवर्तनशील मानते रहे हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। कोई भी समाज या उसकी परंपरा अपनी पूर्व स्थिति या स्थिरता को बनाए रखने के लिए पहले तो वह किसी भी नवाचार का भरपूर विरोध करती है, लेकिन फिर वह उस नवाचार से धीरे-धीरे अभ्यस्त हो जाती है और उसे अपने में समाहित कर लेती है। जैसे कि रेलगाड़ी में सफर के समय पहले से सवार यात्रीगण आगंतुक यात्री का भरपूर विरोध करते हैं, लेकिन कुछ ही समय के बाद वह आगंतुक यात्री भी उस यात्री-समाज की माँग के अनुरूप अपने में कुछ परिवर्तन कर उसमें अपना स्थान बना लेता है और फिर वह भी उसका एक हिस्सा बन जाता है। आधुनिकता, मानवहित और मानव के विकास हेतु अक्सर पारंपरिक कुप्रथाओं की आलोचना करती है। उन्हें बदलने के लिए वह सदैव उद्यत भी रहती है। इसलिए नहीं कि आधुनिकता परिवर्तन-प्रवृत्ति से ग्रस्त है, बल्कि इसलिए कि हर भूत से वर्तमान विज्ञान-सम्मत और उन्नत हुआ करता है।

परंपरा और आधुनिकता एक दूसरे की पूरक बनकर साथ चलने से

यह विरोध हमें दिखाई नहीं देगा। इसे समझने के लिए, परंपरा और आधुनिकता के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष पर हम ध्यान केंद्रित करेंगे। परंपरा या पारंपरिक जीवन-शैली के कई फ़ायदे होते हैं, लेकिन इसके साथ ही परंपरा या परंपरागत जीवन-शैली से हानि के भी कई स्वरूप दिखाई देते हैं। जैसे आधुनिकता के सकारात्मक प्रभाव भी हैं तो नकारात्मक प्रभाव भी हैं।

परंपरागत जीवन-शैली से हानि

परंपरागत जीवन-शैली और कार्य-विधि में व्यक्तिगत विकास को प्रश्रय नहीं मिलता है, जिस कारण पारिवारिक या सामुदायिक सदस्यों में घुटन भरी जिंदगी और उनके मन में दबी इच्छाएँ निरंतर कुंठित होती रहती हैं। निज इच्छानुरूप व्यक्ति न तो स्वयं का और न ही अपने बाल-बच्चों को शिक्षा और दिशा ही दे पाता है और न उन्हें समुचित विकसित ही कर पाता है। एक ही प्रकार के नियमित भोजन, पहनावा, जीवन-शैली आदि व्यक्ति को लगभग स्थिर स्थावर-सा बना देते हैं। परस्पर प्रतिस्पर्धा की भावना भी लगभग समाप्त हो जाती है। व्यक्ति अकेले कुछ भी निर्णय ले पाने में सक्षम नहीं हो पाता है। स्वनिर्भरता के स्थान पर, घर के मुखिया पर सभी आश्रित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में परस्पर अन्तः कलह और कई प्रकार की मानसिक बीमारियाँ हो जाना स्वाभाविक ही है। फिर पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ तले दबकर अधिकांश बच्चे युवा होने से पहले ही प्रौढ़ और फिर शीघ्र ही वृद्ध की श्रेणी में आ जाते हैं।

आधुनिकता के नकारात्मक प्रभाव

परंपरा के विपरीत आधुनिकता के कारण मानवीय परस्पर प्रेम-सौहार्द्र में कमी आई है। आज सभी कार्य बौद्धिकता के कारण अर्थ-प्रधान हो गए हैं। इसके साथ ही वातावरण में हर दृष्टिकोण से प्रदूषण बढ़ा है। आधुनिकता के नाम पर वनों की कटाई, शहरों की स्थापना, कल-कारखानों की स्थापना, आवागमन के लिए अधिक से अधिक सड़कें व रेलमार्ग का निर्माण और उनके विभिन्न साधनों से जलवायु में भयानक परिवर्तन हो रहे हैं। इसी कारण अल्पवृष्टि के कारण कई क्षेत्रों में सूखा, तो अतिवृष्टि के कारण कई क्षेत्रों में बाढ़ जैसी समस्याएँ, तो कभी भूकंप और भू-स्खलन की घटनाएँ बढ़ रही हैं। विज्ञान-संगत उपकरणों पर मानवीय निर्भरता बढ़ी है। शारीरिक कार्य-क्षमता घटी है। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ ही व्यापार जगत अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के उद्देश्य से लगभग सभी वस्तुओं में मिलावट करने लगे हैं, जिसके

नकारात्मक परिणाम देखे जा रहे हैं। अमीर और गरीब के बीच आर्थिक-जन्य अंतर काफी बढ़ा है।

आधुनिकता की चाहत में शहरों में फ्लैट-पद्धति के साथ ही एकाकी जीवन-शैली की संस्कृति बढ़ी है, जिसमें वृद्ध-जनों के लिए स्थान की कमी हुई है। फलतः वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि हो रही है। आधुनिक एकल परिवार जीवन-शैली में स्वनिर्भरता के कारण लोग स्वार्थी और संकीर्ण बनते जा रहे हैं। एकाकी जीवन जीने के कारण बाल-बच्चों की परवरिश 'आया' या 'भाड़े की माँ' जैसी संस्कृति पर आधारित हो गई है। काम के दबाव और डिजिटल मीडिया के प्रभाव के कारण अधिकांश युवा पीढ़ी पारंपरिक रीति-रिवाजों से निरंतर दूर होते रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य संबंधित समस्याएँ, जैसे तनाव, अवसाद, रक्तचाप, मधुमेह, हृदयाघात जैसी अनगिनत जानलेवा बीमारियाँ बढ़ी हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल स्क्रीन ने लोगों को भीड़ में भी अकेला बना कर उनमें तनाव और अवसाद को बढ़ाया है। ये सभी आधुनिकता के ही दुष्परिणाम हैं।

पारंपरिक जीवन-शैली के फ़ायदे

यह बात भी सत्य है कि आधुनिक संदर्भों के अनुकूल रहने वाली परंपराएँ प्रासंगिक और सार्थक बनी रहती हैं। परंतु कुछ ऐसी भी परम्पराएँ हैं, जो वर्तमान में वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक माँगों के प्रतिकूल हैं। फलतः वे लगभग निष्प्राण-सी हो गई हैं। ऐसी परंपराओं में आधुनिक माँगों के अनुरूप विज्ञान-सम्मत और न्याय-संगत तत्वों को समाहित कर उन्हें मानव सहित सम्पूर्ण विश्व हेतु कल्याणकारी बनाकर पुनर्जीवित किया जा सकता है। परंपरा के संबंध में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है- 'परंपरा एक जीवंत प्रक्रिया है, जो अपने परिवेश के अनुसार बदलती रहती है। परंपरा को प्राचीनता का पर्याय नहीं माना जा सकता है, बल्कि यह एक सक्रिय और गतिशील प्रक्रिया है।'

आधुनिकता के सकारात्मक प्रभाव

आधुनिकीकरण से मानव जीवन सहित वातावरण की गुणवत्ता में निरंतर सुधार हुए हैं। इससे प्रभूत आधुनिक एकाकी जीवन प्रणाली में व्यक्ति अपनी कमाई का उपयोग अपनी इच्छानुसार निज तथा अपने परिजन की उन्नति के पीछे करता है। जीवन के हर क्षेत्र में नवीन तकनीकी का विकास हुआ है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में नई-नई दवाइयों की

उपलब्धता के कारण गंभीर बीमारियों का इलाज संभव हुआ है। फलतः बहुत-सी घातक बीमारियों का उन्मूलन हो गया है। आधुनिकता युक्त वैज्ञानिक पद्धति से पैदावार में लगातार हो रही वृद्धि के कारण भुखमरी में बहुत कमी आई है। यातायात संबंधी अत्यंत ही सरल और सुगम साधन उपलब्ध हुए हैं। आधुनिकता के कारण सारी दुनिया आज सिमट कर मात्र कुछ घंटों की दूरी की हो गई है। अधिकांश लोगों के घरों में आधुनिकता के विभिन्न साधन उपलब्ध हैं। ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म की उपलब्धता के कारण केवल देश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी शिक्षा-ज्ञान को आसानी से अर्जित किया जा सकता है। मोबाइल और इंटरनेट की मदद से दुनिया को हर किसी ने अपनी मुट्ठी में कर लिया है। आधुनिकता के आधुनिक उपकरणों के माध्यम से अब तो अंतरिक्ष-भ्रमण या फिर गंभीर समुद्रीतल-भ्रमण का भी लुत्फ़ उठाया जा सकता है। मानव-जीवन क्रमशः सरल और सुगम होता ही गया है।

इस प्रकार जीवन साधने के क्षेत्र में परंपरा और आधुनिकता दोनों का ही अपना अलग-अलग महत्व है। दोनों में सकारात्मकता और नकारात्मकता दिखाई देती है। परंपरा हृदय (भावनात्मक पोषण) की तरह है और आधुनिकता मस्तिष्क (व्यावहारिक ज्ञान) की तरह; दोनों एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। मौलिकता और संरचनात्मकता के आधार पर ऐसा नहीं है कि परंपरा और आधुनिकता एक दूसरे के प्रबल विरोधी सैद्धांतिक अवधारणाएँ हैं। यदि ये परस्पर समान न हैं, तो ये पूर्णतः भिन्न भी नहीं हैं। परंपरा यदि जड़ है, तो आधुनिकता उसकी शाखा-प्रशाखाएँ, पत्ते, फूल-फल आदि हैं। परंपरा भी अपने आप में आधुनिक तत्वों को समाहित करती है और अपने स्वरूप को आधुनिकता के रूप में विकसित करती है। आज भी अनगिनत परंपराएँ समाज में अपने प्राचीन रूप में ही न केवल जीवित हैं, बल्कि वे समाज को आज भी आवश्यक दिशा-निर्देश कर रही हैं। अनगिनत प्राचीन परंपराओं के स्वरूप को आज विज्ञान ने भी स्वीकार कर लिया है। देश के कई प्रांतों में गर्मी के दिनों में बासी भात-पानी खाने की परंपरा रही है। चिकित्सा-वैज्ञानिकों का मानना है कि बासी भात-पानी में लौह, पोटेशियम, कैल्शियम आदि जैसे कई खनिज पदार्थ होते हैं, जो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। बासी भात में फाइबर होता है, जो पाचन को बेहतर बनाता है और कब्ज जैसी समस्याओं को कम करने में मदद करता है। इससे शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है। इसके साथ ही यह डेंगू-बुखार, चेचक और खसरे को नष्ट करने में सहायक होता है।

आधुनिक नवाचार जनित क्रिया-कलाप, प्रारंभ में तो परंपरा और आधुनिकता के संदर्भ में मानवीय और सामाजिक तनाव अवश्य ही पैदा करती है, परंतु समयानुसार वह नवाचार परंपरा या समाज में पूर्णतः नियोजित हो जाता है। समाज भी उस नवाचार को अपना लेता है। ऐसी ही आधुनिकता के साथ सामंजस्यता को स्थापित कर परंपराएँ समाज को नए आकार और गति देने लगती हैं। इसी सिद्धांत को अपना कर दुनिया भर के कई समाज समय की माँग के अनुसार अपनी परंपराओं में आवश्यक परिवर्तन करते रहे हैं और वे परिवर्तित परंपराएँ मानवीय विकास की गति को तीव्रता प्रदान भी करती रही हैं। अतः परंपराओं को अंधी लाठी से पीटने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उन्हें समयानुरूप सँवारने की आवश्यकता है।

निष्कर्षतः

परम्परा और आधुनिकीकरण के क्षेत्र अलग-अलग अवश्य हैं, परंतु कोई भी समाज न तो पूर्ण परम्परागत हो सकता है और न ही पूर्णतया आधुनिक। परम्परा और आधुनिकता का भेद केवल सिद्धान्त और मॉडल के रूप में है, क्योंकि प्रत्येक समाज के अंतर्गत आधुनिकता और परम्परा के तत्व मिले-जुले रूप में दिखाई देते हैं। हाँ, आधुनिकता का प्रभाव लोक परंपराओं पर गहरा और बहुआयामी होता है, जिससे कुछ परंपराएँ कमजोर पड़ती हैं (जैसे संयुक्त परिवार), जबकि कुछ नई परंपराएँ (जैसे डिजिटल संस्कृति) जन्म लेती हैं या पुरानी परंपराएँ आधुनिक संदर्भों में ढलकर जीवित रहती हैं, जिससे एक जटिल मिश्रण बनता है जहाँ परंपरा और आधुनिकता टकराती भी हैं और साथ-साथ विकसित भी होती हैं। योगेन्द्र सिंह का कहना है कि "यह आवश्यक नहीं है कि आधुनिकता अनिवार्य रूप से परम्परा को कमजोर ही करती है। यह भी देखा गया है कि कई बार आधुनिकता के हाथों परम्परा अधिक शक्तिशाली भी हो जाती है।" भारत के आधुनिकीकरण के मूल में परंपरा और आधुनिकता के बीच नाजुक संतुलन निहित है। आधुनिकता लोक परंपराओं के लिए चुनौती और अवसर दोनों है; यह उन्हें मिटा सकती है या उन्हें नया जीवन देकर प्रासंगिक बनाए रख सकती है। हालांकि, भारत अपनी सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखते हुए आधुनिकता को अपना रहा है, जिससे परंपरा और आधुनिकता का एक अनूठा संगम देखने को मिलता है। यह प्रक्रिया भारतीय समाज को अधिक समावेशी, समतावादी और प्रगतिशील बना रही है।

संदर्भ सूची

1. लोक परंपरा: पहचान और प्रवाह, श्यामसुंदर दुबे, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2025.
2. भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण, योगेंद्र सिंह, रावत बुक्स पब्लिकेशन, 1 जनवरी 2006.
3. भारतीय परंपराओं का आधुनिकीकरण और कारक, डाल्वाय, यूपीएससी, 2025.
4. भारतीय समाज में परंपरा एवं आधुनिकता; एक सैद्धांतिक पक्ष, देवेंद्र कुमार और डॉ. पायल गोयल, ग्लोबल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, मार्च 2024.
5. सिंह, योगेंद्र - मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडीशन, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, 1994.
6. परंपरा और आधुनिकता, संतोष चौबे, आईसेक्ट पब्लिकेशन, भोपाल, 2024.
7. परंपरा, आधुनिकता और 21वीं सदी, अनुराग सिंह, अतिथि व्याख्याता, आईजीसीआरटी, 12 दिसंबर 2023.
8. प्रोफेसर योगेंद्र सिंह के विशेष संदर्भ में सामाजिक परिवर्तन तथा समाज और परंपरा में आधुनिकीकरण, प्रदीप कुमार, आई.जे.आर.ए.आर. (IJRAR.ORG), जनवरी 2022, वॉल्यूम 9.
9. क्या परंपरा और आधुनिकता एक दूसरे के विरोधी हैं? - परिकल्पना समय, श्रीराम पुकार शर्मा, अप्रैल 25, 2025.
10. आधुनिक समाज में लोक कथाओं और पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं की भूमिका, ए.पी.ए.सी., 28 मई 2024.